नाम की महिमा

(बालकांड में राम और नाम की तुलना)

सत्संदेश जून 1964 में प्रकाशित

सारे वेद और ग्रन्थ-पोथियाँ जितनी भी हैं, इस बात पर मुत्तफिक (सहमत) हैं कि इन्सान की मुक्ति नाम से है।

एक नाम जुग चार उद्धारे

किसी महात्मा की बाणी आप लो, उसमें इस बात पर ही ज़ोर दिया गया है। आज से पहले कई महात्माओं की वाणी आपके सामने रखी गई है, नफ्से मज़मून (विषय) सबका एक ही रहा है। सबको इस बात पर इत्तेफाक (सहमति) है कि इन्सान की मुक्ति नाम से है।

'नाम' 'नाम' सब कोई कहता है। कहने को तो सारा जहान कहता है मगर 'नाम' की समझ किसी-किसी को है। सो इस 'नाम' की महिमा के मुतल्लिक (बारे में) आगे मुख्तलिफ (भिन्न-भिन्न) महात्माओं की वाणी आपके सामने रखी गई। आज हम 'रामायण' से नाम के मुतल्लिक एक शब्द लेते हैं कि तुलसीदास जी इस बारे में क्या विचार पेश करते हैं। 'रामायण' एक मुस्तनिद किताब, एक प्रमाणिक धर्म-ग्रन्थ है। इसे अमली वेद-शास्त्र कह लो। इसमें नाम का विशेष करके बहुत सारा ज़िक्र आया है बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड में। सन्तों की तालीम परंपरा से चली आती है, आज कोई नई नहीं, सनातन से सनातन और पुरातन से पुरातन है यह तालीम मगर हम इसे भूलते रहे और महात्मा आकर इसे ताज़ा करते रहे। इसी 'नाम' की महिमा का सवाल है। शुरू से आज तक जितने महात्मा आए, इसी की फज़ीलत

(बड़ाई) बयान करते रहे। आज आप 'रामायण' में से देखेंगे कि 'नाम' की क्या महिमा गाई है।

'रामायण' के मुतल्लिक मैं अर्ज़ कर दूँ कि यह बड़ा गूढ़ ग्रन्थ है। पढ़ने को तो सारा जहान ही राजा रामचन्द्र और महारानी सीता की कहानी पढ़ता है मगर इसमें जो गोझ राज़ (भेद छुपा हुआ) है, उसके जानने वाले लोग कम हैं। हो सकता है यहाँ 'रामायण' के माहिर भी बैठे हों, मैं 'रामायण' का ज़्यादा माहिर नहीं। हमें तो नफ्से-मज़मून (विषय-वस्तु) से गर्ज़ है। 'नाम' के मुतल्लिक जो बालकाण्ड में थोड़ा ज़िक्र आया है, उसमें से थोड़ी सी चौपाइयाँ आपके सामने रखी जायेंगी जिनसे 'नाम' की महिमा, उसकी बड़ाई ज़ाहिर होती है। गौर से सुनिये।

(1) समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी।।

गुसाई तुलसीदास जी फरमाते हैं कि समझने में 'नाम' और 'नामी' यकसां (बराबर) हैं, 'नाम' और 'नामी' में कोई भेद नहीं। 'नाम' एक **expression** (अभिव्यक्ति) है और 'नामी' वह चीज़ है जिसे ज़ाहिर करने से लिए ये लफ्ज़ बरते जा रहे हैं। सो 'नाम' और 'नामी' में कोई फर्क नहीं समझा जाता मगर इनके बीच ऐसा रिश्ता है, ताल्लुक है कहो, जैसा सेवक और स्वामी में होता है। स्वामी और सेवक में आपस में दिली भाव होता है न। सेवक के अन्दर स्वामी का भाव है। सेवक न हो तो स्वामी की खबर किस को होती है? सेवक से ही स्वामी की तमीज़ (पहचान) की जाती है। अगर सब स्वामी हों तो तमीज़ कहाँ रहेगी? ऐसे ही 'नामी' है मगर नामी का इज़हार नाम से है। 'नाम' और 'नामी', एक इज़हार है, एक वह चीज़ है जिसका इज़हार है। सो फरमा रहे हैं कि 'नाम' और 'नामी' में समझने के लिए तो कोई फर्क नहीं, आपस में इनका गूढ़ ताल्लुक है। ये एक दूसरे से **connected** (जुड़े

हुए) हैं। जैसे किसी आदमी का नाम राम सिंह है, नाम लेने से वह फौरन खिंच जाता है ऐसे ही 'नाम' और 'नामी' का भेद है। आपस में इनका गूढ़ ताल्लुक है, गहरा रिश्ता है। सो तुलसीदास जी फरमा रहे हैं कि समझने में 'नाम' और 'नामी' दोनों यकसां (समान) हैं मगर उनके दरमियान रिश्ता होता है। आगे इस मज़मून को खोलते चले जायेंगे, गौर से सुनने के काबिल है।

(2) नाम रूप दोइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी।।

कहते हैं, कहने को तो 'नाम' और 'रूप' दोनों ईश्वर की उपाधि हैं। उपाधि से मुराद (अभिप्राय) है माया। हैं तो ये दोनों माया पर दोनों अकथ और लायबान हैं। माया माया सारा जहान ही कहता है पर माया क्या चीज़ है, इस की समझ किसी-किसी को है । इसके तीन रूप हैं— प्रधान, प्रकृति और माया। प्रधान —पर के मायने हैं 'परे' और 'धान', जिससे लम्पटताई हो, जिस से जुड़ा हो, जिसके साथ जुड़ा हो उससे ताल्लुक होता है। यह **higher stage** (ऊँची स्टेज) है माया की। सिफ्त मौसूफ (गुण, गुणी) से जुदा नहीं। यह समझने वाली बात है। पानी की ठंडक पानी से जुदा नहीं, दोनों एक ही हैं मगर खाली गर्मी तो आग नहीं। आग जो जलाने वाली चीज़ है, वह कुछ और है। गर्मी उसका इज़हार (अभिव्यक्ति, गुण) ज़रूर है। इसी तरह नाम और रूप दोनों माया बयान किए जाते हैं। दोनों अनादि भी हैं और अकथ भी हैं। वैसे वेदान्त में माया के बारे में कहा है कि, 'यह (माया) एक अनहोनी चीज़ है जो होई नज़र आती है।' सन्त भी कहते हैं, यही ठीक है । एक बात ज़रूर है, सिफ्त मौसूफ (गुण, गुणी) से जुदा नहीं। यह (सिफ्त) उस का इज़हार है और वह (मौसूफ) खुद वह चीज़ है जिसका इज़हार है। तो जो मालिक है, उसका जो ईश्वर-पना है, वही माया है, उसको प्रधान कहते हैं। इस स्टेज से जब नीचे आता है तो उसे प्रकृति कहते

हैं — 'पर' कहते हैं 'परे' को, 'कृति' जिसमें क्रिया, कर्म यानी काम करने का गुण या स्वभाव हो। उस को सूक्ष्म कह लो, और माया बाहर जो है— 'मा' कहते हैं मापने वाला, 'या' कहते हैं यन्त्र को। वह कौन सा यन्त्र है? यही हमारी बुद्धि। यही माया है । माया ईश्वर से जुदा नहीं। इसकी अपनी कोई **existence** (हस्ती) नहीं। यह निर्भर है ईश्वर पर मगर ईश्वर-पना ईश्वर से जुदा नहीं। यह गोझ(भेद) की बात है जो समझने के काबिल है। यह बात अगर समझ में आ जाये तो बात कुछ भी नहीं।

माया को अन्तर्वचनी करके बयान किया है, ऐसी चीज़ जो अपने आप में कुछ नहीं और फिर भी है। संतों ने इसको बड़ी खूबसूरती से बयान किया है। माया भूल का नाम है। जितनी **creation** (रचना) दुनिया में है, यह सब माया है। जब हम इसमें ही रह जाते हैं और इसको जो बनाने वाला है, जो **background** (आधार) है इसकी, उसको भूल जाते हैं तो यह माया है, नहीं तो यह भी माया नहीं। तो माया भूल का नाम है, यह कह लो।

माया होई नागणी जगत रही लपटाये।।
जो इसको सेवन्दे फिर तिस ही को खाये।।

माया नागिनी होकर जगत को लिपट रही है— स्थूल में भी, सूक्ष्म में भी, कारण में भी। माया, प्रकृति और प्रधान— तीनों में इसका यह गुण है, इज़हार है कहो। एक दूसरे से जुदा नहीं। इसकी (माया की) अलेहदा **(separate)** हस्ती कोई नहीं, मगर है। तुलसीदास जी बड़ी खूबसूरती से बयान कर रहे हैं कि कहने को तो नाम और रूप दोनों ही ईश्वर की उपाधि (माया) हैं मगर 'नाम' और 'रूप' दोनों ही अकथ और अनादि हैं। 'नाम' और 'रूप' दोनों किसी चीज़ के हैं। इस चीज़ से

उन्हें जुदा कैसे करोगे? एक आम है, उस पर लाली है, उस पर सब्ज़ी (हरियाली) है। उस पर जो लाली या उसके पक्केपन का इज़हार है, उसे आम से जुदा कैसे कर सकते हो? है कुछ भी नहीं। उसका (लाली का) इज़हार आम पर है मगर उसकी अपनी निजी, अलेहदा कोई हैसियत नहीं। सो कहते हैं, 'नाम' और 'रूप' दोनों ईश्वर की उपाधि हैं मगर दोनों ही अकथ और अनादि हैं। कहते हैं, जब तक कोई श्रेष्ठ बुद्धि वाला न हो, इस बात को समझ नहीं सकता। यह भी साथ कह दिया कि जब तक कोई अच्छी समझ वाला न हो, इसको समझ नहीं सकता। बात बड़ी साफ है मगर समझ नहीं आ रही। सारी दुनिया 'माया, माया' पुकार रही है मगर हकीकत की समझ नहीं आ रही। मैंने पहले अर्ज़ किया कि ईश्वर कर ईश्वरपना, सत्य की सत्यता, 'सत्यता' ही सत्य का इज़हार है न। जो इज़हार है, वह माया है मगर उससे (जिसका इज़हार हो रहा है) जुदा नहीं। इसलिए सन्तों ने कहा—

एह विस संसार जो तू देखदा, हर का रूप है, हर रूप नदरी आया।।

जिसकी वह आँख खुली, माया का जो आधार है, उसकी **background** (आधार) है जो, उस को जो देखने लग गया, वह देखता है कि सारा संसार उसी का रूप है। है भी और नहीं भी। नहीं तब है जब हम भूल में रहें। बाहर जो इज़हार है उसका, उसी में लम्पट रहें तो यह सारी रचना बड़ी भारी मशीनरी की आँख है फँसाने की। अगर अन्तर की आँख खुल जाये, जिस का इज़हार हो रहा है, उस को हम देखने लग जायें तो यह (रचना) गोझ (भेद) नहीं रहती। वह (माया) है भी और नहीं भी, दोनों सूरतें हैं। बड़ी खूबसूरती से बयान कर रहे हैं। कहते हैं जो अच्छी समझ वाले हैं, वे इसको समझ सकेंगे, बाकी नहीं।

(3) को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू।।

अब फरमाते हैं तुलसीदास जी कि इस में से किस को बड़ा कहें और किस को छोटा? ईश्वर-पने (ईश्वरत्व) को बड़ा कहें या ईश्वर को? किस को बड़ा कहें और किसको छोटा? दोनों एक हैं। एक इज़हार है, एक वह चीज़ है। एक सिफ्त है, एक मौसूफ है। सिफ्त मौसूफ से अलेहदा नहीं। किसको छोटा कहें और किस को बड़ा कहें? छोटा बड़ा कहेंगे तो पाप करेंगे न। चीज़ तो एक ही है न? एक तो वह चीज़ है और एक उस का इज़हार है। इस में छोटा कौन और बड़ा कौन? हाँ, माया उन लोगों को है जिनकी आखें बन्द हैं। नहीं, तो यह संसार—

एह जग सच्चे की है कोठरी, सच्चे का विच वास।।

जिनकी आँख नहीं खुली, उन को यह सब 'माया' है। स्थूल के ऊपर आओ तो सूक्ष्म में फिर माया है, उसमें 'प्रकृति' है। सूक्ष्म से ऊपर, कारण में जाकर 'प्रधान' है। इन तीनों से अतीत हो जाओ तो हकीकत की समझ आये। मगर जिनकी आँख खुलती है, उन्हें यही उस का स्वरूप नज़र आता है। सो कहते हैं, इसमें छोटा किस को कहें, बड़ा किस को कहें? ऐसा कहने से पाप होगा। कहते हैं, उसके गुणों को सुन-सुन कर साधुओं को उसका भेद समझ में आता है। साधु, जो साधना करके उधर गये। साधु किस को कहते हैं? साधु उस को कहते हैं जो त्रिगुणातीत अवस्था को पा गये। जो तीन गुणों और माया, प्रकृति और प्रधान तीनों से पार हो गया, उस का नाम साधु है। कहते हैं, नाम को साधु समझते हैं, उसके गुणों को सुन-सुन कर साधु उस के भेद को समझते हैं, आम दुनिया उसे नहीं समझती। आम लोग बाहर फैलाव में जा रहे हैं, वे जिस्म का रूप बने बैठे हैं और भूल में जा रहे हैं।

माया होई नागणी जगत रही लपटाये।।
जो इसको सेवन्दे फिर तिस ही को खाये।।

नागिन जब बच्चे जनती है तो कुण्डली मार कर फिर उन्हीं को खाती है। कोई गुरमुख ही है जो गुरु के सन्मुख बैठा हो, कोई ऐसा गुरमुख हो, वह पाँव तले रौंद डालता है माया-रूपी नागिन को अर्थात् उसके ऊपर आ जाता है। उसकी आँखों पर यह माया पर्दा नहीं डाल सकती। सो कहते हैं कि कोई साधुजन ही इसके भेद को समझ सकता है।

(4) देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना।।

फरमाते हैं, 'रूप' 'नाम' के मातहत है, अधीन है। उस के 'रूप' का ज्ञान 'नाम' के ज्ञान बिना कैसे होगा? वह उस से अलेहदा नहीं, उसी का इज़हार है। गो (चाहे) 'माया' में शामिल है मगर उस से (ईश्वर से) जुदा नहीं। वह अनादि भी है और अकथ भी है जैसे वह मालिक है मगर उस की अपनी **existence** (हस्ती) कोई नहीं। वेदान्त भी यही कहता है। सन्त भी यही कहते हैं, यहाँ भेद नहीं, सिर्फ आगे समझने का फर्क है।

(5) रूप विसेष नाम बिनु जानें। करतल गत न परहिं पहिचानें।।

अगर नाम नहीं मालूम किसी चीज़ का, चीज़ देखी भी है, नाम नहीं मालूम, आँखों के सामने है, फिर भी नाम के बगैर हाथों पर धरी चीज़ पहचाने में नहीं आती। करोगे भी क्या? है कुछ एहसास तो कर रहा है मगर उसका इज़हार **expression** (अभिव्यक्ति) कोई नहीं। सो 'माया' के बगैर उस 'नामी' का इज़हार भी नहीं। 'नामी' 'माया' से जुदा नहीं, 'माया' उसका इज़हार है। अब हम राम कहते हैं। वह ताकत जो रम रही है, वह 'राम' है। अब जो रमने का गुण है, वह

'राम' से जुदा नहीं। यही 'माया' और हकीकत (नामी) में कहो, असलियत में कहो, फर्क तो कोई नहीं, सिर्फ इज़हार का तरीका है। इसीलिए सन्तों ने दुनिया के त्याग का ख्याल नहीं दिया। वे कहते हैं, दुनिया में रहो, यह जो 'माया' 'माया' तुम पुकारते हो, इसी में रह कर तुम्हारा कल्याण हो सकता है। सिर्फ जो आँख है देखने वाली, उसको बदलने का सवाल है, अन्तर की हकीकत के खुलने का सवाल है।

पूरा सत्गुरु भेटिये पूरी होवे जुगत।।
हसंदियां खेवन्देयां पहनंदेया विच्चे होवे मुक्त।।

दुनिया को छोड़ने की ज़रूरत नहीं। जंगलों में जाओगे, वहाँ भी तो माया है। वहाँ दरख्त (पेड़) हैं, गाय, भैंस, बकरी आदि जानवर हैं। रोटी है, पानी है, बिछौना है, वहाँ भी तो माया है। माया को छोड़ कर कहाँ जाओगे? एक **right angle of vision** (सही नज़री) होना चाहिये, देखने वाली आँख का बनना है। जब तक कोई अनुभवी पुरुष न मिले, वह आँख बनती नहीं। दुनिया हाय-हाय करती मर जाती है। कभी मालिक का रूप नज़र आता है? हरेक जगह उसका मन्दिर है। **Devotion** से, भाव भक्ति से, प्यार से जहाँ सजदा करो (माथा टेको), वहीं उसका (प्रभु का) मन्दिर है। परमात्मा कहाँ नहीं? यह बताओ। परमात्मा हरजाई (सर्वव्यापक) है। ऐसे ही उसका इज़हार भी हरजाई है। वह (प्रभु) उससे (इज़हार से) जुदा नहीं। जो आधार कहो, **background** कहो, वह हकीकत है। हकीकत न हो तो यह भी (उसका इज़हार भी) न हो।

(6) सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें। आवत हृदय सनेह बिसेषें।।

यहाँ थोड़ा सा बयान करते हैं । एक चीज़ को आपने देखा नहीं मगर अक्षरों में उसका बयान आया है। बयान करने से थोड़ी थोड़ी कशिश,

थोड़ा प्यार महसूस होता है। आपने कहा, आम मीठा होता है। अभी देखा नहीं उसे। फिर कहा, उसमें छिलका होता है, गूदा होता है उसमें। गूदा मीठा होता है। ऐसी ही नाम का, इस तरह बयान करने से उसका थोड़ा-थोड़ा एहसास होने लगता है, थोड़ा-थोड़ा प्यार जागने लगता है, गो (चाहे) उसको अभी देखा नहीं। इसी तरह अक्षरों का, जो हकीकत के इज़हार के लिए बरते जाते हैं, उन का ताल्लुक हकीकत से है। इसी तरह पढ़ने से भी थोड़ा शौक पैदा होता है। पढ़ना शौक दिलाने के लिए ठीक है मगर हकीकत के खुलने के लिए अन्तरीय आँख का खुलना ज़रूरी है। इसी तरह सुमिरन या जप या प्रभु के नाम की याददहानी (सुमिरन) उस तरफ हमारी तवज्जो दिलाने (ध्यान खींचने) के लिए बरती जाती है। तो यह याददहानी अर्थात् नाम का 'सुमिरन' या 'जप' पहला कदम है इसके लिए।

(7)नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी।।

कहते हैं 'नाम' और 'रूप' की जो महिमा की गई है, उस की अकथ कहानी है। अभी जो बयान किया गया है, उस को केवल समझने लग जाये इन्सान, केवल **theory** (सिद्धान्त) समझने लग जाये, तो कहते हैं यह चीज़ बड़ी खुशी पैदा करने वाली है। अब यह पता लग जाये कि 'नाम' और 'रूप' उससे (ब्रह्म से) जुदा नहीं। है यह माया मगर इज़हार (प्रकटावा) हकीकत से परे नहीं। कहते हैं कि जो इस बात को समझ जाये उसके अन्दर बड़ी खुशी पैदा करने वाली है यह चीज़। यह ऐसी खुशी देती है जो बयान में नहीं आ सकती। खाली समझने में यह बात है तो देखने में क्या कुछ होगा!

(8) अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।।

अब फरमाते हैं कि निर्गुण और सगुण के दरमियान यही नाम ही है

जो दोनों की तरजमानी करता है, दोनों की बात बयान करता है। हकीकत को समझाने के लिए 'नाम' और 'रूप' हैं। 'नाम' और 'रूप' न हों तो हकीकत कहाँ समझ आये? तो कहते हैं, 'नाम' दुभाषिये का काम करता है, तरजमा करता है दोनों का। यह ऐसी ज़बानों का जानने वाला है जो निगुर्ण और सगुण दोनों की तशरीह (व्याख्या) कर देता है। अगर 'नाम' और 'रूप' न हों तो तशरीह कैसे हो? निर्गुण क्या है? सगुण क्या है? 'नाम' ही से इसका इज़हार है। 'नाम' ही से हम समझ सकते हैं कि निर्गुण क्या है, सगुण क्या है? बुद्धि के आधार पर हम इसको मापते हैं । 'नाम' और 'रूप' से ही हम इसको समझ सकते हैं। इस लिए 'नाम' और 'रूप' दोनों लाज़िम मलजूल (एक दूसरे के लिये निहायत ज़रूरी) हैं।

(९) दोहा - राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुं जौं चाहसि उजिआर।।

पहले 'नाम' और 'रूप' कर के बयान किया। अब 'राम-नाम' कर के बयान कर रहे हैं। राम के मायने है 'रमा हुआ'। 'रमत ही ते रामा', जो रम रहा है उसे 'राम' कहते हैं। एक अक्षर राम है उसको बोध कराने के लिए। एक वह पावर है जो ज़र्रे ज़र्रे (कण-कण) में रमी हुई है और जिसका यह सब इज़हार हो रहा है। तो कहते हैं कि अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे अन्दर और बाहर ज्योति का प्रकाश हो जाये तो क्या करो? 'राम नाम मनि दीप धरु', राम नाम का जो दीवा है, दीप है, उसे मन के द्वार पर रख दो। मन करके, अपने जी से, तवज्जो कहो, ख्याल कहो, सुरति कहो, उस से सुमिरन करो, मन करके राम नाम जपो, तुम्हारे अन्तर और बाहर प्रकाश हो जाएगा। एक नाम रूप कहा, एक राम नाम, ऐसा नाम जो रमा हुआ है। कहते हैं, इस नाम का दीवा इस मन के द्वार पर रख दो तो तुम्हारे अन्तर बाहर प्रकाश

हो जायेगा। रमे हुये नाम से ताल्लुक आयेगा तो क्या होगा? आँख बन्द करो तो अन्तर प्रकाश और बाहर प्रकाश हो जायेगा।

नाम जपत कोट सूर उजियारा।।

सो कहते हैं मन करके उसका सुमिरन करो। जब तक यह न करोगे, काम नहीं बनेगा। सुमिरन कई किस्म का है, एक ज़बान से सुमिरन, एक कंठ से सुमिरन, एक हृदय से सुमिरन, ये तीन प्रकार के सुमिरन हैं, बैखरी, मध्यमा और पश्यन्ति। इन तीनों में जब तक मन साथ न हो, काम नहीं बनता। सो कहते हैं, मन के द्वार पर रमे नाम को रख दो, आपके अन्तर और बाहर प्रकाश हो जायेगा। अक्षर से चलना है ज़रूर मगर अगर रमे हुए नाम का इज़हार चाहते हो, उसका **contact** चाहते हो (उससे जुड़ना चाहते हो) तो मन करके उसका जाप करो। यह (मन) स्थिर होगा तब लाईट आ जायेगी। यही सब महात्मा कहते हैं।

गुरु ज्ञान अंजन सच नेत्रीं पाया।।
अन्तर चानण अज्ञान अन्धेर वंझाया।।

कहते हैं, हमारी आँखों में गुरु ने ज्ञान का सुरमा डाल दिया जिससे अज्ञान का अँधेरा दूर होकर हमारे अन्तर में प्रकाश ही प्रकाश हो गया। शायराना (कवितामयी) बयान है। इस का नतीजा क्या होता है? अन्तर प्रकाश ही प्रकाश हो जाता है। यह निशानी है नाम का **contact** मिलने की। **St. Mathews** कहते हैं, **If thine eyes be single, thy whole being shall be full of light** (तेरी दो आँखों की अगर एक आँख बन जाये तो तेरे अन्दर नूर ही नूर भर जायेगा)।

मुसलमान भाई कहते हैं, कोहेतूर (तूर पहाड़) पर खुदा का जलवा हज़रत मूसा ने देखा। यह कोहेतूर है दोनों आँखों के पीछे। चलो गगन

के ऊपर, सब महात्मा यही कहते हैं। तुलसीदास जी थोड़ा इशारा कर रहे हैं, नाम रूप सब बयान करके कि अगर तुम उस रम रही पावर का, अन्तर और बाहर इज़हार (अन्दर बाहर उसे प्रकट करना) चाहते हो तो मन को थोड़ा खड़ा करके मन से उसका जाप करो। उसका नतीजा यह होगा कि तुम्हारे अन्तर और बाहर प्रकाश हो जायेगा। यह निशानी है नाम का **contact** (संपर्क) मिलने की। परमात्मा ज्योति-स्वरूप है और नाम को परमात्मा परिपूर्ण पावर कह लो, **God-in -Action Power** (व्यक्त प्रभु-सत्ता) कह लो।

(10) नाम जीह जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी।।

'नाम जीह जपि' जी करके, ज़िन्दगी करके, जिन्द जान करके (अपनी ज़िन्दगी और जान करके) अगर इसको (नाम को) ऐसे जपोगे तो जैसे योगीजन सोई हुई हालत से अतीत हो जाते हैं, ला-ताल्लुक हो जाते हैं ऐसे ही तुम भी हो जाओगे। यह 'नाम' की महिमा है। गुरु नानक साहब से योगियों ने पूछा, 'नाम' के बारे में तो उन्होंने फरमाया—

जैसे जल में कमल निरालम मुर्गाई नीसाने ।।
सुरत शब्द भव सागर तरिए नानक नाम बखाने।।

कि जैसे कमल जल में रहता हुआ भी अलेप रहता है, पानी का असर कबूल नहीं करता और मुर्गाबी जल में रहती हुई भी सूखे परों से उड़ जाती है ऐसे ही सुरति शब्द से लग जाये तो इन्सान भवसागर से अतीत हो जाता है (तर जाता है)। यह 'नाम' की महिमा है। इस वक्त सुरत और मन दोनों एकत्र हैं। हमने आगे इसको (सुरत को भी) मन से अलेहदा करना है। फिलहाल इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ कर मन से और सुरत से दोनों करके जाप करना है। सो कहते हैं कि 'नाम जीह

जपि', कि 'नाम' को जी से, मन से जप कर योगीजन सोई हुई हालत से जाग उठते हैं। इस वक्त तो हम सोये पड़े हैं। सारी दुनिया की यही हालत है। मन-इन्द्रियों से जब हम ऊपर आएँ तभी हम जाग सकते हैं।

मोह माया सभे जग सोया एह भरम कहो किउ जाई।।

कि सारा जहान मोह-माया में सो रहा है। सो कहते हैं कि नाम को जी करके, उसे मन से जपने से योगीजन जाग उठते हैं और संसार के मोह-माया की वृत्ति छोड़ कर अतीत हो जाते हैं, ला-ताल्लुक हो जाते हैं, दुनिया में रहते हुए भी वे दुनिया के नहीं रहते। यह नाम की महिमा बयान की जा रही है।

(11) ब्रह्म सुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा।।

कहते हैं कि उसकी (नाम की) बरकत से इन्सान ब्रह्म के सुख को, जो अनूप है, बेनज़ीर (बेजोड़) है, अकथ है, ला बयान है, उसे अनुभव करने लग जाता है। वह बगैर नाम रूप है, वह अकथ और अनाम है। पहले नाम और रूप में उसका इज़हार बताया, पहले 'नाम' और 'रूप' का ज़िक्र किया। अब कहते हैं, 'नाम' और 'रूप' से अलग है वह। अकथ है वह, अनाम है। पहले इज़हार बताया, अब कहते हैं कि 'नाम' 'रूप' से परे है, ऊपर है वह। बड़ा तमीज़ी बयान है यह। **Differentiate** करके, अलग अलग करके बड़ी खूबसूरती से बयान कर रहे हैं। कहते हैं, 'नाम' और 'रूप' दोनों लाज़िम-मलज़ूम (एक दूसरे के लिए ज़रूरी) हैं। यह इज़हार के लिए है, वह जो रमा हुआ 'नाम' है, ज़र्रे-ज़र्रे में रम रहा है जिससे लाईट आती है, वह 'नाम' और 'रूप' से भी ऊपर है। यह (नाम-रूप) उस का इज़हार है, वह **background** (आधार) है इसका।

(12) जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीहं जपि जानहिं तेऊ।।

कहते हैं, जो नाम की गूढ़ गति को जानना चाहता है, इस पेचीदा राज़ को समझना चाहता है, वह क्या करे? वह जी कर के, मन कर के, नाम को जपे। सुमिरन कई किस्म का है— ज़बान का, कंठ का, हृदय का सुमिरन। सन्तों का सुमिरन रूह का सुमिरन है— मन कर के, जी कर के, रूह कर के नाम को जपना। मुसलमान फकीरों ने इसे ज़िक्रे – रूही कर के बयान किया है।

ज़िक्रे – रूही जुज़ फने दर्वेश नेस्त

कहते हैं, सुरत का, रूह का, जो सुमिरन है, जी कर के जो सुमिरन किया जाता है, वह आमिल फकीरों का मत है, वही इसका भेद जानते हैं। सारी दुनिया दूसरे सुमिरनों में है। सो कहते हैं कि अगर इस राज़ को समझना चाहते हो तो जी करके इसका सुमिरन करो।

(13) साधक नाम जपहिं लय लाय। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाय।।

कहते हैं, जो साधक लोग हैं, जो उससे लौ (लिव) लगा कर 'नाम' जपते हैं, जो नाम पावर को ध्याने वाले हैं, जो उस से लगते हैं, **contact** करते (जुड़ते) हैं, वे अनिमा, गरिमा आदि जो सिद्धियाँ हैं, उन को पा कर सिद्ध हो जाते हैं।

रिद्ध – सिद्ध नावें की दासी।।

'नाम' को जपने से रिद्धियाँ – सिद्धियाँ भी आ जाती हैं। 'नाम' की दासियाँ हैं यह रिद्धियाँ – सिद्धियाँ मगर सन्तों ने इन को बरतने का हुक्म नहीं दिया क्योंकि इस से हम फिर इज़हार में (फैलाव में) चले जाते हैं और हकीकत से दूर हो जाते हैं। तो 'नाम' के जपने से बे – अख्तियार रिद्धियाँ – सिद्धियाँ आ जाती हैं।

(14) जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।

कहते हैं, जो बहुत दुखी लोग हैं, 'नाम' के जपने से उनके दुख दूर हो जाते हैं और उनको खुशी प्राप्त होती है। गुरु नानक साहब ने एक बार कहा—

नानक दुखिया सब संसार।।

उनसे पूछा कि महाराज! कोई सुखी भी है? तो फरमाने लगे, हाँ है—

सो सुखिया जिस नाम अधार।।

जिसको नाम का आधार मिल गया, जिसकी आत्मा पिंड को छोड़ कर नाम पावर से लगने लग गई, वह सुखी हो गया। सो बड़े – बड़े दुखी लोग जो हैं वे नाम को पाकर सुखी हो गये। उन के सब दुख दूर हो गये।

सरब रोग को औखध नाम।।

सब दुखों का वाहिद (एकमात्र) इलाज 'नाम' है। फिर अर्ज़ कर दूँ कि नाम की समझ किसी – किसी को है। ये (तुलसीदास जी) अपने तरीके से बयान कर रहे हैं। 'नाम' दो किस्म का है, एक अक्षरी नाम, एक वह पावर, वह ताकत जिसका यह अक्षरी नाम बोध कराने वाला है, एक '**Name**,' दूसरा '**Named**', एक 'इस्म', दूसरा 'मुसम्मा', एक 'नाम,' दूसरा 'नामी।' अक्षरी नामों से चल कर, 'नाम' और 'रूप' से चल कर, वह नाम पावर, 'नाम' और 'रूप' जिसका इज़हार कर रहे हैं, हमें उस पावर को, ताकत को पकड़ना है, उसके साथ लगना है। उसके साथ लगने में शान्ति और सुख है। आप 'नाम' और 'रूप' में, ज़ाहिरदारी में लगे रहोगे बगैर हकीकत के पाने के, तो तुम दुखी रहोगे। यही सब महात्माओं ने कहा है। स्वामी जी महाराज ने इसी बात का ज़िक्र किया है।

सुरत तू दुखी रहे हम जानी।

फरमाते हैं, ऐ सुरत! ऐ आत्मा! तू दुखी है, यह हम देख रहे हैं। कब से दुखी है तू? आगे जवाब देते हैं।

जा दिन ते तैं शब्द विसारा, मन संग यारी ठानी।।

कि ऐ भाई! जिस दिन से तूने 'शब्द' या 'नाम' को विसार दिया, नाम-पावर से तू दूर हो गया और मन से यारी लगा ली और मन-इद्रियों के घाट पर लम्पट हो रहा है, 'नाम' और 'रूप' में फंस रहा है, उस वक्त से तू दुखी है। अब अगर तू सुखी होना चाहता है तो क्या कर? **As a natural corollary,** यह करो कि मन की यारी छोड़ो और शब्द से लगो। तरीका है अपना अपना, बात वही है। 'नाम' मिल गया जिसको, वह निर्भय हो गया। मगर यहाँ 'नाम-पावर' से लगने का सवाल है। अक्षरी नामों से चल कर हमें उस पावर से लगना है।

(15) राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा।।

कहते हैं, दुनिया में चार प्रकार के भक्त हैं। पहले, जिज्ञासु लोग, जो तलाश कर रहे हैं हकीकत को। दूसरे, अर्थार्थी लोग जो किसी गर्ज़ से प्रभु को याद करते हैं— यह मिल जाये, वह मिल जाये। तीसरे, अति दुखी और चौथे, ज्ञानी जो ज्ञान को पा गये। चार किस्म के भक्त हैं। कहते हैं ये चारों ही 'नाम' के जपने से सुखी हो गये। ज्ञानी बने तो वे भी 'नाम' के साथ लगने से। जो तलाश कर रहे हैं हकीकत को, उनको यह चीज़ मिल गई। जो दुखी हैं, उनकी पुकार सुनी गई। जो अर्थार्थी लोग हैं, उनकी इच्छायें पूरी हो गई 'नाम' के जपने से। चार ही चीज़ें हैं —धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन चारों के देने वाला है 'नाम'। 'नाम' बड़ी ऊंची चीज़ है जिसकी समझ आम दुनिया को नहीं

आ रही। सिर्फ अक्षरी नामों का ही उनको बोध है, इस से परे नहीं।

(16) चहू चतुर कहुं नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा।।

कहते हैं कि चारों प्रकार के भक्तों का प्यारा 'नाम' है। उन सब का उद्धार 'नाम' से हुआ। गो (चाहे) भगवान को, कहते हैं, ज्ञानी ज्यादा प्यारा है। जो अनुभव को पा गया, वह प्यारा हुआ। सो कहते हैं, इन चारों प्रकार के भक्तों में से जो ज्ञानी हैं, वे ज्यादा प्यारे हैं भगवान को। मगर चारों किस्म के भक्तों को नाम प्यारा है, ज्ञानी को भी 'नाम' प्यारा है, बाकियों को भी।

(17) चहुं जुग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि बिसेषि नाहिं आन उपाऊ।।

कहते हैं, चार युगों में, चारों श्रुतियों (वेदों) में 'नाम' ही का प्रभाव है। चारों वेद और सारे धर्मशास्त्र 'नाम' की महिमा गा रहे हैं। चारों युगों में 'नाम' की महिमा होती चली आ रही है।

एक नाम जुग चार उधारे।।

कहते हैं, चारों युगों में 'नाम' का प्रभाव रहा है। कलियुग में खास कर 'नाम' के बगैर और कोई उपाय नहीं है। चारों युगों में 'नाम' के बगैर और कोई उपाय नहीं है। मगर कलियुग में खास तौर पर 'नाम' ही एक उपाय है। कलियुग में आयु कम है, लोगों की बुद्धि कम है। इन्सान हृष्ट-पुष्ट नहीं रहे, वे लम्बे साधन —— प्राण-योग, हठ-योग आदि क्रियायें आयु के लिहाज़ से थीं। सतयुग में, कहते हैं, लाख वर्ष की आयु थी। थी या नहीं, इस से हमारी गर्ज़ (झगड़ा) नहीं, ऐसा बयान किया जाता है। यह भी बयान आता है, फलाने ऋषि ने अठासी हज़ार वर्ष तप किया, फलाने ने इतने हज़ार वर्ष तप किया। भई, यह हो सकता है लाख वर्ष की उम्र हो। त्रेता में कहते हैं, दस हज़ार वर्ष की रह गई। द्वापर में, कहते हैं, एक हजार वर्ष की उम्र रह गई। कलियुग में सौ

वर्ष की उम्र कहते हैं मगर पचास-साठ वर्ष से ज़्यादा नहीं है। बताओ ऐसी हालत में हम ऐसे लम्बे साधन कहाँ कर सकते हैं? सो कहते हैं, कलियुग में नाम के सिवाय और कोई साधन नहीं। गुरवाणी में भी आया है-

अब कलु आयो रे, कलु आयो, नाम बोवो, नाम बोवो।।
आन रुत नाहीं नाहीं, मत भरम भूलो, नाम बोवो।।

कितना साफ़ बयान किया है। भई, कलियुग में सिवाय नाम के और कोई उपाय नहीं। यही तुलसी साहब फरमा गये। यही गुरु साहब फरमा गये।

(18) दोहा - सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहुं किए मन मीन।।

कहते है, गर्ज़ों (इच्छाओं) से रहित होकर जो नाम जपते हैं चार गर्ज़ें (कामनाएँ) हैं— कोई बीमारी के इलाज के लिए नाम जपता है, कोई रुपये के लिए, कोई मान-बड़ाई के लिए और कोई मोक्ष की प्राप्ति के लिए नाम जपता है। तो कहते हैं, जो चारों गर्ज़ों से रहित हो कर नाम जपते हैं, वही सच्चे मायनों में उस की भक्ति का रस लेते हैं। जैसे मछली पानी के बिना नहीं रह सकती, पानी उसका जीवनाधार है, ऐसे ही नाम उसका जीवनाधार बन जाता है, वह उसके बिना रह नहीं सकता। गुरु नानक साहब ने कहा है:

आखण औखा साचा नाउ।।

कि जब जब मैं उस को याद करता हूँ, मुझे ज़िन्दगी मिलती है। मगर नाम लाबयान है, यह अनुभव की चीज़ है। जब इसका **contact** (संपर्क) मिले, वह चीज़ मिलती है। इस से पहले नहीं मिल सकती।

(19) अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।।

आगे, अब बयान करते हैं कि निर्गुण और सगुण दोनों ब्रह्म के स्वरूप हैं। दोनों अकथ हैं, कहने में नहीं आ सकते। लाबयान हैं, गम्भीर हैं, अनूप हैं, अनादि हैं, ला-मिसाल हैं। अब उन से कोई पूछे कि आप की क्या राय है? 'नाम' की महिमा गा रहे थे आप! आप की राय में सगुण और निर्गुण में से कौन सी चीज़ बढ़ कर है? आगे फरमाते हैं-

(20) मोरें मत बड़ नाम दुहू तें। किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें।।

कहते हैं, मेरी समझ में 'नाम' दोनों से बढ़ कर है। मेरी मति अनुसार, जिस चीज़ को मैंने समझा है, उसके अनुसार निर्गुण और सगुण इन दोनों से 'नाम' ऊँचा है क्योंकि दोनों की कंट्रोलिंग पावर है यह। निर्गुण और सगुण में इज़हार किस का है? यही, 'नाम' का है।

नानक नावें के सब कुछ वस है पूरे भाग को पाये।।

नाम कंट्रोलिंग पावर है। बड़े ऊँचे भाग्य हों तो इस से ताल्लुक हो। 'नाम-पावर' निर्गुण और सगुण दोनों का इज़हार करने वाली है। 'नाम-पावर' निर्गुण और सगुण दोनों को कंट्रोल करने वाली ताकत है। इस लिए 'नाम' दोनों से बढ़ कर है। मज़मून बड़ा बारीक है मगर बड़ी खूबसूरती से बयान कर रहे हैं।

(21) प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउं प्रतीति प्रीति रुचि मन की।।

कहते हैं, प्रौढ़ सज्जन जो हैं, जो दूसरों के दिल की बात को जान लेते हैं, 'जाने जन जन की,' जो लोगों के दिल की बात जानने वाले हैं, उनकी बात वे जानें। मेरे मन को प्रीति और प्रतीति है, जो प्रतीति मुझे हुई है, मैं तो उसके अनुसार बयान कर रहा हूँ।

(22) एकु दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू।।

कहते हैं, जैसे आग लकड़ी में छुपी है। आग ज़ाहिर है मगर लकड़ी में छुपी हुई आग लकड़ी से अलग नहीं। आग और लकड़ी हैं दोनों एक ही, ऐसे ही सगुण और निर्गुण दोनों ब्रह्म के स्वरूप हैं। सगुण भी वह है, 'सोही सूक्ष्म, सोही स्थूल।' वही सगुण है, वही निर्गुण है। दोनों ही औसाफ (गुण) हैं। दोनों की जो **background** है, जो आधार है दोनों का, उस से हमारी मुराद (अभिप्राय) है। सो कहते हैं, इन्सान उस को जान जाये तो उस की गति हो सकती है नहीं तो यह सिफ्तों में लगा रहेगा और जन्म-मरण में आता रहेगा, इसका आना-जाना बना रहेगा।

(23) उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउं नामु बड़ ब्रह्म राम तें।।

अब कहते हैं, निर्गुण और सगुण दोनों का साधन कठिन है। 'नाम' का साधन आसान है, क्यों? 'नाम' के ज़रिये से ही निर्गुण और सगुण दोनों की समझ आती है। 'नाम' की समझ न हो तो निर्गुण और सगुण की हकीकत समझ नहीं आती कि वह क्या चीज़ है? एक मशीनरी चल रही है, कहीं पेवे बना रही है यानी रूई को अलेहदा कर रही है, कहीं धागे बँट रही है। यह तो बाहरी सिलसिला हुआ न! अब इस की समझ तब आती है जब **background** समझ में आये। उसकी समझ न हो तो कुछ समझ नहीं आता कि वह क्या है, क्यों चल रहा है, क्यों बन्द हो जाता है? सो कहते हैं, ये जो बाहर चीज़ें हैं, उनके समझने के लिए भी नाम जब तक न हो, ठीक समझ नहीं आती। इन्द्रियों के घाट से ऊपर ला कर कोई महात्मा अन्तर 'नाम' का ताल्लुक (अनुभव) दे देता है तो इसको (निर्गुण और सगुण की) समझ आने लगती है। जैसे पावर हाऊस से इन्सान लग जाये तो सारी मशीनरी की, कि वह कैसे चलती है, कैसे काम करती है, उसकी सारी

समझ उसे आने लगती है। ऐसे ही नाम से निर्गुण और सगुण दोनों की समझ आने लगती है।

(24) ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनन्द रासी।।

कहते हैं, वह मालिक व्यापक है। वह घट-घट में, ज़र्रे-ज़र्रे में समाया हुआ है। वह अविनाशी है, सच्चिदानन्द है, आनन्द का खज़ाना है, वह सब में व्याप रहा है। कोई ऐसी जगह नहीं, जहाँ 'नाम' न हो।

जेता कीता तेता नाऊं।। बिन नावें नाहीं को थाऊं।।

कि यह जितना किया हुआ पसारा है, सब 'नाम' का है, कोई जगह इससे खाली नहीं। कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ 'नाम' न हो।

(25) अस प्रभु हृदयं अछत अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी।।

हैरानी की बात है, वह परमात्मा सब में व्याप रहा है, फिर भी दुनिया के लोग दुखी हैं। जब वह प्रभु सब में है तो लोग दुखी क्यों हैं? आगे बतलाएंगे कि वे दुखी क्यों हैं? वह (प्रभु) है तो सब में, घट-घट में व्याप्त है, वह ज़र्रे-ज़र्रे में समा रहा है। हम उस में इस तरह तैर रहे हैं जैसे मछलियाँ पानी में मगर पानी में रहते हुए सब प्यासे मर रहे हैं, इसका कारण क्या है? आगे जवाब देते हैं—

(26) नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें।।

कहते हैं, इसका सबब (कारण) यह है कि नाम का जो असल रूप है, उसे यत्न कर के प्रकट किया जाये। वह प्रकट करने वाली चीज़ है। लकड़ी में आग है, अगर प्रकट कर लो उसे तो वह जलाती है और दूसरे काम भी करती है। तो है तो सही नाम मगर उसे प्रकट करना होगा। वह गुप्त रूप में है सब में, 'गुप्त नाम परगाजा,' यह गुरवाणी कहती है—

गुप्ती बाणी प्रकट होवै।।

वह गुप्त है, उसको प्रकट करने के लिए थोड़ा यत्न करना पड़ता है, थोड़ा काम करना पड़ता है। जब प्रकट हो जाए तो उस की कीमत बढ़ जाती है वरना वह पत्थरों में शामिल है। बड़ी खूबसूरती से ज़िक्र कर रहे हैं कि वह नाम सब में परिपूर्ण है। फिर दुनिया हाय-हाय क्यों कर रही है? कहते हैं कि इसका कारण यह है कि उस नाम को प्रकट नहीं किया यत्न कर के। **Water, water everywhere but not a drop to drink.** पानी-पानी सारा जहान करता है, वह प्रभु सब जगह है, कहाँ नहीं? मगर हमें एक कतरा नसीब नहीं, हम प्यासे मर रहे हैं। तुलसी साहब फरमाते हैं—

है घट में सूझत नहीं लानत ऐसी जिन्द।
तुलसी या संसार को भया मोतियाबिन्द।।

यही भीखा साहब कहते हैं—

भीखा भूखा को नहीं, सब की गठरी लाल।
गिरह खोल नहीं जानते, ताते भये कंगाल।।

'नाम' रूपी लाल बँधा पड़ा है सब के पल्ले में पर उस में जड़-चेतन की ग्रन्थी (गाँठ) बँधी पड़ी है। जब तक यह गाँठ न खुले हम भूखे के भूखे रह जाते हैं। दौलत के होते हुए भी हम भूखे हैं। नाम को पाकर हम सुखी हो जाते हैं। 'नाम' सब में परिपूर्ण है, फिर भी हम क्यों दुखी हैं? कहते हैं, इसका कारण यह है कि हम ने उसे प्रकट नहीं किया।

(27) दोहा- निरगुन तें एहि भांति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउं नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार।।

कहते हैं, निर्गुण से 'नाम' का प्रभाव बड़ा है। नाम ऊँचा है उससे, यह सबब दिया। कहते हैं, सारी बात समझाने के बाद, कि मैं अपने

विचार के अनुसार, अपनी समझ के मुताबिक ऐसा कहता हूँ। लोगों को भी पूरा हक दिया है तर्क का। कहते हैं, मैं अपनी समझ के अनुसार 'नाम' को 'राम' से बड़ा कहता हूँ। 'राम' और 'नाम' का मुकाबला कर रहे हैं। एक अक्षरी नाम है, एक रम रही ताकत का नाम है। आगे फिर और कहते हैं, 'राम' और 'नाम' का मुकाबला करेंगे आगे। 'नाम' को 'राम' से बड़ा करके बतलाया है अपनी समझ के अनुसार। अब मुकाबला करते हैं। कहते हैं, भक्तों के फायदे के लिए कहो, उन्हें सुख देने के लिए कहो, राम ने शरीर धारण किया और लोगों का, साधुओं का दुख मिटाया। अवतारों का काम यही है। जब जब धर्म की ग्लानि होती है वे दुनिया में आते हैं। शहर में गड़बड़ हो जाए तो फौज के कंट्रोल में दे दिया जाता है। फिर दो चार दिन में सब सैट कर के फिर सिविल के हवाले कर दिया जाता है। इसी तरह जब जब धर्म की ग्लानि होती है, दुनिया में दुख बढ़ जाते हैं, वह ताकत इज़हार कर के किसी पोल पर बैठती है। राम अवतार आये दुनिया में, अधर्मियों को दंड देने के लिए। ये राम की तारीफ कर रहे हैं। राम जो राजा दशरथ के बेटे थे, चौदह कला सम्पूर्ण अवतार, ये उनकी तारीफ कर रहे हैं क्योंकि दोनों का इज़हार एक दूसरे के ऊपर है। सन्तों के राम और आम दुनिया के राम में बड़ा फर्क है।

एक राम दशरथ का बेटा। एक राम घट घट में पैठा।।
एक राम का सकल पसारा। एक राम सबहूँ ते न्यारा।।

सबहूँ ते न्यारे राम का, राम जो इज़हार में है, उससे मुकाबला कर रहे हैं।

(28) राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किए साधु सुखारी।।

(29) नाम सप्रेम जपत अनयासा।। भगत होहिं मुद मंगल बासा।।

कहते हैं, जो प्रेम के साथ नाम को जपते हैं, बिना तकलीफ के मंगल के, खुशी के मुकाम (स्थान) को पा जाते हैं। मंगल कहते हैं खुशी के मुकाम को।

(30) राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी।।

कहते हैं, भगवान राम के जीवन का वाकेआ बयान किया जाता है कि ***अहिल्या जो पत्थर हो गई थी, उसे पैर छुआ कर ज़िन्दा कर दिया राम ने, एक का उद्धार कर दिया और नाम ने गये – गुज़रे, बुरे से बुरे इन्सानों का, करोड़ों पापियों का उद्धार कर दिया। नाम बड़ा हुआ कि नहीं? असल बात क्या है कि नाम उस पावर का, ताकत का नाम है जो सबको बनाने वाली है। अवतारों को बनाने वाली भी है और सन्तों को बनाने वाली भी है।*** बिजली एक ही है, कहीं वह आग जला रही है और कहीं बर्फ जमा रही है। बिजली वही है, उसके इज़हार में फर्क है। कहीं अवतारों का काम कर रही है वह ताकत, कमांडर – इन – चीफ का काम कह लो, मिलिट्री का काम कह लो वह काम कर रही है और कहीं वह वायसराय का काम कह लो, सिविल का काम कह लो, वह कर रही है। दोनों की **background,** (आधार) एक ही ताकत है। कबीर साहब ने इसका निर्णय किया है।

काल अकाल खसम का कीना एह प्रपंच वधावन।।

अर्थात् काल पावर और अकाल – पावर दोनों ही उस खसम (मालिक) की बनाई हुई हैं क्योंकि यह प्रपंच बनाना था। तो पावर जो आधार है, जो **background** (आधार) है, वह तो एक ही है, उसके काम में फर्क है। कमांडर – इन – चीफ का अपना काम है, सिविल का अपना काम है। पापियों को दंड देने के लिए, धर्मियों को उबारने के

लिए वह मिलिट्री पावर काम करती है। और सन्तों का क्या काम है? सुरत को मन – इन्द्रियों की कैद से छुड़ा कर लोगों को प्रभु से जोड़ना। ***अवतारों का काम है दुनिया को बाकायदगी में ला कर उस का स्थापन करना ताकि वह आबाद रहे और सन्तों का काम दुनिया को, क्या कहना चाहिए, उजाड़ना है। सुरत, मन – इन्द्रियों के घाट के ऊपर आ कर नाम से लग गई तो वह दुनिया में क्यों आयेगी? दुनिया तो उजड़ गई।***

काल और दयाल दोनों ताकत कहाँ से लेते हैं? एक ही मालिक से। आजकल कोई दयाल के पक्ष में है, कोई काल के पक्ष में है। अरे भाई! दोनों की ज़रूरत है अपनी – अपनी जगह, सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस बैठा हो, हम कुछ न करें तो वह हमें कुछ नहीं कहेगा। अगर कोई तंग करे तो कौन हमें बचायेगा, वह सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस और उसका महकमा। सो दोनों की अपनी – अपनी जगह ज़रूरत है दुनिया के लिए, बाकायदगी के लिए, दोनों ताकतों का इज़हार हो रहा है। हमारे दिल में दोनों के लिए इज़्ज़त है। सन्तों की गर्ज़ यही है कि इन्सान का आने – जाने का झगड़ा न रहे। सुरत पिंड से यानी इन्द्रियों के घाट से आज़ाद हो जाये। इस का जन्म – मरण खत्म हो जाये, यह हमेशा की राहत (शान्ति) को पा जाये। इस काल के देश को बहुत बुरा कहा गया है। इस में रहते हुए काल से निकल कर अकाल से जुड़ कर, फिर उससे भी परे दोनों का जो आधार है, उसको पाना है हमने। उसे स्वामी – पद कहते हैं। गुरु साहबों ने उसे महा – दयाल कह कर बयान किया है। बात एक ही है, सिर्फ तरीका बयान का है अपना – अपना। बात एक ही है, कशमकश (झगड़ा) कहीं नहीं। सिर्फ समझने में फर्क है।

(31) रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी।।

फिर कहते हैं कि राम ने ऋषियों की भलाई के लिए विश्वामित्र के यज्ञ में गड़बड़ डालने वाली ताड़का राक्षसनी को मारा। उस के बेटे मारीच को कत्ल किया ताकि ऋषि-मुनि सुख से रहें और नाम ने क्या किया? सो कहते हैं—

(32) सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा।।

कहते हैं, 'नाम' ने क्या किया कि भक्तों की बुरी वासना के जो दोष थे, गिरावट थी जितनी, पाप थे, उन सब का नाश कर दिया। जैसे सूरज के चढ़ने से अँधेरा खत्म हो जाता है, इसी तरह नाम के साथ लगने से सब आलायशें (मैलें) खत्म हो गई। ज्ञान-रूपी अग्नि कह लो, 'नाम' की ज्वाला कह लो, उस से लगने से सब आलायशें हवन हो जाती हैं।

(33) भंजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू।।

अब भगवान राम का ज़िक्र आता है कि उन्होंने शंकर के ज़बरदस्त धनुष को तोड़ा था। इस तरफ नाम का प्रताप क्या करता है? जग के भय का नाश करता है। भय की कमान, जिसने जगत को जकड़ रखा है, उसे तोड़ देता है। 'नाम' से लग कर इन्सान निर्भय हो जाता है।

(34) दंडक बन प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किए पावन।।

राम के बारे में ज़िक्र आता है कि वे दंडक वन में गये, वह अच्छी जगह बन गई। कहते हैं, नाम ने भक्तों के मन को गुलज़ार बना दिया। वे (राम) एक जगह रहे और उस जगह को गुलज़ार बनाया, 'नाम' ने दुनिया के भक्तों के दिलों को गुलज़ार बना दिया।

(35) निसिचर निकर दले रघुनंदन। नामु सकल कलि कलुष निकंदन।।

कहते हैं, राम ने जितने राक्षस थे, उनके वंश का नाश किया और

नाम ने कलियुग के सारे पापों का नाश कर दिया। जो 'नाम' से लगे, उन के सारे पाप नाश हो गये। आगे कहते हैं —

(36) दोहा- सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल वेद बिदित गुन गाथ।।

(37) दोहा- ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महं लिय महेस जियं जानि।।

फरमाते हैं, राम ने भीलनी के जूठे बेर प्रेम वश खाये और जटायु को, जो गिद्ध था, उसका कल्याण किया। रावण सीता को हर कर ले जा रहा था तो उस (जटायु) ने लड़ाई की थी उस से। इन दोनों की गति की राम ने। अच्छे भक्तों की गति की उन्होंने। 'नाम' ने अनेकों पापियों का उद्धार किया।

आगे फिर, कई मिसालें दी हैं कि राम ने विभीषण, हनुमान वगैरा को शरण दी और 'नाम' ने अनेकों गरीबों का उद्धार किया। राम ने समुद्र पर पुल बाँधा, 'नाम' ने लोगों को भवसागर से पार दिया। राम ने खानदान (कुटुम्ब) समेत रावण को मार दिया और 'नाम' को जिन्होंने जी करके जपा, उन्होंने बगैर किसी मेहनत के जगत के मोह माया को जीत लिया। सो कहते हैं, 'नाम' सब से बड़ा है।

(38) नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी।।

फरमाते हैं, 'नाम' के प्रसाद से, 'नाम' की बरकत से अविनाशी शिव जो हैं, जो बाहरी क्रियाओं के लिए, साँप आदि पास रखते हैं और श्मशान भूमि जिनके रहने का स्थान बताया जाता है, कहते हैं, ये साँप, राख, श्मशान भूमि आदि, जो अमंगल वस्तुएँ हैं, 'नाम' के जपने ने इन सब को मंगल रूप बना दिया।

(39) सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी।।

कहते हैं, शुक, सनक, सुनन्दन आदि जितने ऋषि-मुनि बने, वे सब 'नाम' की बरकत से बने। जितना-जितना वे 'नाम' से लगे, उतनी-उतनी उनकी गति हो गई, वे ब्रह्मानन्द के सुख को भोगते रहे। किस की कृपा से? 'नाम' की कृपा से।

(40) नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू।।

कहते हैं, नारद जो शिरोमणि भक्त थे, उन्होंने 'नाम' के प्रताप को जाना और जगत के प्यारे विष्णु जो थे, नारद उनके प्यारे बन गये। 'नाम' कोई आज नया नहीं, वह शुरू से है। जितनी-जितनी किसी को समझ आई इसकी, वे इसका इज़हार करते रहे। जिस जिस का कल्याण आज दिन तक हुआ, चाहे वह नारद मुनि हों या कोई और ऋषि, वह 'नाम' से हुआ। जितना-जितना वे 'नाम' से लगे, उतना उनका कल्याण हो गया। 'एक नाम जुग चार उद्धारे,' जितने भक्तजन बने वे 'नाम' ही की कृपा से बने।

(41) नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू।।

कहते हैं, 'नाम' के जपने से प्रभु इतने प्रसन्न हुए कि प्रह्लाद को शिरोमणि भक्त बना दिया। 'नाम' का इज़हार कोई आज नहीं हुआ। युगों-युगों से इसका इज़हार था। हम भूलते रहे, महात्मा आ कर इस तालीम को ताज़ा करते रहे। कबीर साहब ने अपनी कथा बयान की है कि मैं चारों युगों में आया। सतयुग में मेरा नाम 'सतसुकृत' था। फिर त्रेता में मैं आया, उस समय मेरा नाम 'करुणामय' था। फिर द्वापर में आया, उस समय मेरा नाम 'मुनेन्द्र' था। कलियुग में मेरा नाम 'कबीर' है। कहते हैं, चारों युगों में मैं लोगों को यही 'नाम' की महिमा समझाता रहा।

'नाम' हमेशा से है। कई भाई ख्याल करते हैं कि यह सिलसिला अभी शुरू हुआ है, पहले नहीं था। भई, यह हमेशा से चला आ रहा है। बाकी वक्त और ज़माने के मुताबिक इसका इज़हार किया जाता है। दुनिया 'नाम, नाम' कहते हुए नाम से बेखबर रहती है। महात्मा आ कर इसे ताज़ा कर जाते हैं। हम भूलते रहते हैं, वे आ कर हमें रास्ते पर डाल देते हैं और इस तालीम को फिर **revive** (ताज़ा) कर देते हैं, उसे ज़िन्दा कर जाते हैं, बात तो इतनी है।

(42) ध्रुव सगलानि जपेउ हरि नाऊं। पायउ अचल अनूपम ठाऊं।।

कहते हैं, ध्रुव ने गुस्से में आ कर 'नाम' जपा था। वह घर से नाराज़ हो कर निकला था। राज्य किसी और को दे दिया गया। ये घर से निकल गये और 'नाम' जपने लगे। नतीजा क्या हुआ कि वे अचल मुकाम को पा गये, अटल भक्त बन गये। चाहे दुनिया से नफरत में आकर ध्रुव ने नाम जपा, पर जब वह दुनिया से उपराम हुआ तो अटल मुकाम को पा गया। किस की कृपा से? 'नाम' की कृपा से।

(43) सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।।

कहते हैं, पवन सुत हनुमान ने नाम का सुमिरन किया और राम को वश में कर लिया। नाम की महिमा है न! ये सब मिसालें किस लिए दे रहे हैं? कि भई, जिस किसी का उद्धार होगा तो किस से? नाम से। सिर्फ नाम को समझने की बात है, 'नाम' और 'रूप' दोनों का जो आधार है, उस से लगने का सवाल है।

(44) अपितु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भये मुकुत हरि नाम प्रभाऊ।।

अब फरमाते हैं, अजामिल, गणिका आदि कितने ही पापियों का कल्याण हुआ, कैसे? 'नाम' से। गणिका जैसी बेसवा (वेश्या) और अजामिल जैसे पापी तर गये, 'नाम' के साथ लगने से। बड़े-बड़े पापी

नाम से लग कर तर गये। हम भी 'नाम' से लग जायें तो हमारा भी उद्धार होगा। गुरु रामदास जी ने एक ज़िक्र किया है कि अगर आप लकड़ियों के अम्बार में थोड़ी चिंगारी आग की डाल दें तो सारा अम्बार खत्म हो कर स्वाह (राख) का ढेर रह जाता है। ऐसे ही पापों के अम्बार लगे हों तो साधु से थोड़ी 'नाम' की लूती (चिंगारी) लेकर लगा दो तो सारे पापों का नाश हो जाता है। 'नाम' की महिमा गा रहे हैं। आखिर क्या कहते हैं—

(45) कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई।।

कहते हैं, कहाँ तक 'नाम' की महिमा बयान की जाये, सच बात तो यह है कि भगवान राम भी 'नाम' के गुणों का बखान नहीं कर सकते। एक जगह इज़हार हो रहा है उसका, एक पोल (खम्भा) है, एक पावर हाऊस है बड़ा भारी। पोल की जितनी ताकत होगी, उतना ही इज़हार करेगा बिजली घर का, नहीं तो वह फट जायेगा। इन्सानी पोल पर जितना उस शक्ति का इज़हार हो सकता है, उतना ही होगा। वह पूरी ताकत का इज़हार नहीं कर सकेगा और यह बयान में आने वाली चीज़ नहीं। वह तो ला-बयान है, इसमें राम की हेठी (नीचे बताने) का सवाल नहीं किसी तरह से। इसमें राम की बड़ाई है। जितनी शक्ति का वह पोल होगा, उतना ही इज़हार होगा उसमें। इन्सान उसको क्या बयान कर सकता है? जितनी ग्रन्थ-पोथियाँ, वेद-शास्त्र आये, उसकी महिमा बयान करते रहे। गुरु नानक साहब फरमाते हैं, कितने ही ऋषि, मुनि, महात्मा उसकी महिमा गाते रहे, इतने ही और भी आ जायें उसकी महिमा करने वाले, तो भी 'आख न सके केही के'। वह ला-बयान ही रहेगा।

(46) दोहा- नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भांग ते तुलसी तुलसीदासु।।

फरमाते हैं, जो 'राम-नाम' है, जो रमा हुआ 'नाम' है, वह कल्प वृक्ष है और कलियुग में कल्याण का निवास है, कलियुग में इसके सिवा और कोई कल्याण नहीं। इसके (नाम के) सिमरन करने से जो गरीब तुलसी था, तुलसीदास बन गया। किस की महिमा से? 'नाम' की महिमा से। 'नाम' की बड़ी भारी महिमा है। 'नाम' की महिमा आगे भी आ रही है। यह तो 'रामायण' में से, जो हिन्दुओं की एक मुस्तनिद (प्रमाणिक) किताब, एक बड़ा उच्च प्रमाणिक धर्म ग्रन्थ है, उसमें बताया गया था कि वे भी इसी की, नाम की, महिमा गा रहे हैं, तुलसीदास जी इसमें भी नाम की महिमा गा रहे हैं, सब सन्त-महात्मा 'नाम' की महिमा गाते चले आ रहे हैं। अरे भई, छोटी-छोटी बातों पर न चले जाओ। अपराविद्या (समाज-धर्म) अपनी-अपनी रहे। जिस समाज में तुम पैदा हुए, वे समाज तुम्हें मुबारिक हों। हमने किसी न किसी समाज में रहना है। सो अपने-अपने समाज में रहो और उस समाज के नियमों के मुताबिक जीवन बसर करो मगर जो नाम की गति है, उसे हासिल कर लो।

गुरु अर्जुन साहब ने गुरु ग्रन्थ साहब के लिए जो वाणी इकट्ठी की तो कौन सी-कसौटी सामने रखी? यही कि जो नाम के जपने वाले थे, जो उसके माहिर थे, उनकी वाणियाँ उसमें शामिल कर दीं। चुनांचे उसमें कबीर साहब जुलाहे की वाणी है, नामदेव छीपे की वाणी है, रविदास चमार की वाणी है, तरलोचन ब्राह्मण की वाणी है। उसमें धन्ना जाट और सेना नाई के भी श्लोक हैं। गुरु साहिबान खत्री थे। अरे भई, खत्री, ब्राह्मण, जाट हमने बनाये हैं। परमात्मा ने किसी को मोहर लगा कर तो नहीं भेजा कि ये सब जाट हैं, ये ब्राह्मण हैं, ये खत्री हैं?

परमात्मा ने तो इन्सान बनाये। इन्सान आत्मा देहधारी का नाम है, आत्मा उस परमात्मा की अंश है। इसकी जाति वही है, जो परमात्मा की है। हजूर (बाबा सावन सिंह जी) से एक बार पूछा गया कि महाराज आप कौन हैं? उन्होंने फरमाया कि परमात्मा हिन्दू है तो मैं हिन्दू हूँ। आत्मा की ज़ात वही है जो परमात्मा की ज़ात है। बाकी सामाजिक लिहाज़ से मैं सिख हूँ।

हमें किसी न किसी समाज में रहना पड़ेगा वरना नया समाज बनाना पड़ेगा। क्यों वक्त ज़ाया करते हो? परमात्मा ने कर्मों के अनुसार जिस समाज में पैदा किया, उसमें रहो, सदाचारी बनो। नेक-पाक जीवन बसर (व्यतीत) करो, उस समाज में रहते हुए और उसके नियमों का पालन करते हुए, अपनी आत्मा को मन-इन्द्रियों से आज़ाद करके उसे नाम से लगाओ। वही समाज मुबारिक है जिसमें रह कर यह काम कर लो। नाम के साथ लगने से ही तुम्हारा कल्याण होगा। वही बाहरी समाज मुबारिक है जहाँ बैठ कर तुम यह काम कर सको। सन्तों के नज़दीक समाजों का सवाल नहीं। वे कहते हैं, इन्सान आत्मा देहधारी है, वहाँ ऊँच-नीच का भी सवाल नहीं। वे कहते हैं:

मानुस की ज़ात सबै एके पहचानबो।।

पूर्व-पश्चिम का सवाल नहीं, न उत्तर-दक्षिण का सवाल है। इन्सान आत्मा देहधारी है लेकिन यह अपने आप को भूल गया है। इसे होश नहीं कि वह जिस्म नहीं, जिस्म का मकीन (निवासी), उसे चलाने वाला है। सो यहाँ अपने आप को जानने का सवाल है। सन्तों की हमेशा से यह तालीम रही है, यही नाम की तालीम, यही मुसलमान फकीरों का 'कलमा' है। 'कलमे' से चौदह तबक बने, मुसलमानों के धर्म ग्रन्थ कहते हैं। 'कलमा' क्या है, क्या अक्षर है वह? कहते हैं—

ऐ खुदा बिनमा मारा आं मुकाम। कन्दरो बे हर्फ़ मी रोयद कलाम।।

कहते हैं, ऐ खुदा! मुझे वह मुकाम बता जहाँ बिना हर्फ़ों के तेरा कलमा उग रहा है। अब अक्षर बताओ कहाँ रह गये? 'कलमे' से चौदह तबक बने। ताकत बन गई न, अक्षर तो न रहा। हिन्दुओं का धर्म-ग्रन्थ कहता है, 'नाद' से चौदह भवन बने। इधर (गुरवाणी में) कहते हैं कि 'नाम' से खण्ड-ब्रह्मंड धारे गये, 'शब्द' से धरती और आकाश बने। इधर ईसाइयों के धर्मग्रन्थ में आया है कि **'Word'** (शब्द) मालिक के साथ था, जब कुछ भी न था, तब भी 'शब्द' था, शब्द खुद खुदा था, सारी सृष्टि शब्द के पीछे बनी। यही गुरु साहब कह रहे हैं—

सगली सृष्टि शब्द के पाछे।। नानक शब्द घटो घट आछे।।

'शब्द' कहो, 'नाम' कहो, 'अकथ-कथा', 'श्रुति' कहो। उपनिषदों में उसे 'उद्गीत' कहा है। सब महात्माओं ने 'नाम' की महिमा गाई है अपने अपने तरीके से। आज़ाद दिली से इनके कलाम पढ़ो तो करीब हो जाओगे एक दूसरे के। यह हमारी तंगदिली तास्सुब (कट्टरपन) है जिसने एक दूसरे को जुदा कर रखा है। यह एक **common ground** (सांझी जगह) है जहाँ आप बैठे हुए 'रामायण' की कथा सुन रहे हैं। यहाँ सब की वाणी, कभी गुरु साहिबान की और कभी स्वामी जी की वाणी ली जाती है। सन्तों की तालीम हमेशा से एक चली आ रही है। यह तालीम कोई आज की नहीं, परम्परा से चली आ रही है। यह एक खास मज़मून है। जैसे डाक्टरी है, ऐसे ही आत्म-विद्या का एक ख़ास मज़मून है। किसी भी समाज में तुम रहो, वह समाज तुम को मुबारिक है मगर उस समाज में रहते हुए इतने ऊँचे उठ जाओ कि सारी दुनिया तुम्हारे लिए एक समाज बन जाये। सत्गुरु की तारीफ भी यही की है—

सत्गुर ऐसा जाणिये जो सबसे लिए मिलाए जीयो।।

वहाँ यह नहीं कि हिन्दू आयें, मुसलमान न आयें। वे समाजों की नज़र से नहीं देखते, वे (सन्तजन) सबको मिला कर बैठते हैं क्योंकि वे आत्मा की नज़र से दुनिया को देखते हैं। आत्मा को इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर 'नाम' से जोड़ना उनका काम है। 'नाम' से जुड़ने में मनुष्य का कल्याण है। सन्तों के नज़दीक ऊंच नीच का कोई सवाल नहीं। वे किसी समाज से निकालते नहीं किसी को, न कोई नया समाज बनाते हैं। वे कहते हैं कि अपने अपने समाज में रहो, नेक-पाक जीवन व्यतीत करो और 'नाम' से लगो हमेशा के सुख के लिए। तो यह था 'रामायण' का एक शब्द, जहाँ तुलसीदास जी ने थोड़ा सा 'नाम' का निर्णय दिया है। उसमें से थोड़ा हिस्सा हमने लिया, सारा नहीं लिया।

+++